पाठ 7. अनुशासन

पाठ का परिचय

नियमों का पालन करने को अनुशासन कहते हैं। जीवन को सुखमय बनाने के लिए हर काम को ठीक समय पर करना होता है। सूरज हमें अनुशासन की शिक्षा देता है। समय पर उगता और अस्त होता है। इसी प्रकार घड़ी की दोनों सुइयाँ भी अनुशासन का ज्ञान देती हैं। मुर्गा सुबह-सुबह बाँग देकर नियमों का पालन करने का महत्व बताता है। प्रकृति में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो हमें अनुशासन की सीख देते हैं, जैसे – फूल, फल, वर्षा। सभी समय पर अपना कर्म करते हैं। यदि समय पर वर्षा न हो तो धरती का क्या हाल होगा? अत: आदमी को सुख और आनंद प्राप्त करने के लिए अनुशासन में अवश्य रहना चाहिए।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

अनुशासन के महत्व को समझना। अनुशासन में रहकर जीवन को सुखी बनाना। समय अमूल्य निधि है, इसे जानते हुए समय को व्यर्थ न गँवाना। समय-सारिणी बनाकर उसपर अमल करना। विद्यार्थी जीवन में जो आदत पड़ जाती है, वह सदैव रहती है। अत: अनुशासन में रहना सीखना चाहिए।

पाठ का वाचन

स्वयं आदर्श वाचन करते हुए पूरा पाठ पढ़ें। बच्चे ध्यान से सुन रहे हैं या नहीं, यह जानने के लिए बीच-बीच में प्रश्न पूछें। इसके बाद बच्चों से थोड़ा-थोड़ा अंश पढ़वाएँ। उनके उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें।

- नियमों का पालन करने को क्या कहते हैं?
- नियमों का पालन करने से क्या होता है?

प्रत्येक बालक से अनुकरण वाचन करवाएँ। अशुद्ध शब्दों का उच्चारण शुद्ध-शुद्ध करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

अनुशासन के महत्व पर चर्चा करें। गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू जैसे महान नेताओं के जीवन का उदाहरण देते हुए बताएँ कि नियमों का पालन करते हुए वे किस प्रकार महान नेता बने। निम्नलिखित प्रश्न पूछकर बच्चों के विचार जानें –

- समय को महत्वपूर्ण क्यों कहते हैं?
- क्या गया हुआ समय वापस आ सकता है?
- कौन-कौन समय का पालन करता है और किस प्रकार करता है?
- किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जो नियमों का पालन नहीं करता है?